डॉ. दयानाथ सिंह "शरद"

"चलो संकल्प लेते हैं"

चलो संकल्प लेते हैं,
सभी संकल्प लेते हैं
गंगा हमारी मां, हमारी शान है,
देश की है अस्मिता पहचान है,
भूलकर भी हो नहीं अपमान इसका,
हृदय से संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

मां हमें क्या-क्या नहीं देती,
क्या-क्या गिनाऊं क्या नहीं देती,
अन्न-जल-औषधि है देती तृप्ति देती है;
इसे सूखने देंगे नहीं संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

सींचती धरती, हमें हरियालियां देती,
खलिहान भरती है, हमें खुशहालियां देती,
करें पोषण वनों-जंगल, तालों का तलैयों का;
अविरल हो प्रवाहित संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

गंगा और यमुना हैं भारत की अमर थाती,
और हिमालय है यहां ताने हुए छाती,
हमें है गर्व, जगत में मान है इसका यही जानो;
न जाने देंगे मान हम संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

प्रदूषित होने से बचाना है इसे,
जो संकल्प मेरा है, बताना है इसे,
करें नहीं अक्षम्य हम अपराध कोई,
मां की फिर लौटे मुस्कान, संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

गंगा-यमुना हैं हमारे देश का श्रृंगार,
किनारों पर बसा है सुंदर शहरों का संसार,
जिसकी शोभा अद्‌भुत, अनुपम-अतीव है,
इसको मिटने न देंगे, संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

है उत्तम धरोहर भारत की यही,
कठोर तपस्या का फल भगीरथ की यही,
लीन हैं साधना में मुनि और तपस्वी,
बढ़ाएं मान इसका संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

अमृत हो जैसे, है गंगा का जल,
देता है जीवन, है गंगा का जल,
गंदा नाला, पर इसको बनाया है हमने;
फिर निर्मलता की इसकी संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

मरी हैं नहीं अभी गंगा और यमुना,
अभी प्राणवान हैं गंगा और यमुना,
बेटों से त्याग आज मांग रही हैं;
चलो कर्तव्य का संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

जहर मत घोलो अपने ही स्वार्थ का,
करो कुछ काम निःस्वार्थ हो परमार्थ का,
घुट-घुट मरेंगे अन्यथा सारे लोग;
मन से पवित्रता का संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

आरती मनोहारी है होती यहां पर,
अहर्निश गूंजता है शंख और डमरू यहां पर,
नक्कारा घड़ियाल और बजती शहनाइयां
मां नहीं हो उदास संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

स्वर्ग से उतर कर आई धरा पर,
है खुशियां अपार लाई धरा पर,
है तरन तारन मानो आभार 'मां' का,
आओ चरण-वंदना का संकल्प लेते है;
चलो संकल्प लेते हैं।

लहर लहर में इसके मधुरिम संगीत हैं,
बेटों के लिए अंतस में स्नेह है प्रीत है,
ऐसी है मां पीड़ा दें इसको ये धर्म नहीं;
गंगा-यमुना उत्थान का संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

न खाली पीली बातें हम करें अब,
न झूठी मूठी सौगातें हम बांटे अब,
स्वच्छ धवल आंचल हो मां का, काम करें ऐसा;
बहती रहे धारा, संकल्प लेते हैं,
चलो संकल्प लेते हैं।

इसे प्रदूषित करे जो, मां की संतान नहीं,
वह दानव है जिसमें धर्मों ईमान नहीं,
भूल क्षमा करो मां, नमामि गंगे, नमामि गंगे;
अपराध अब दुबारा न हो, संकल्प लेते हैं
चलो संकल्प लेते हैं।

संपर्क करें:
डॉ. दयानाथ सिंह "शरद"
अभयना मंगारी, वाराणसी-221 202, उत्तर प्रदेश
मो. 09454842609